वैज्ञानिक सोच-समझ पुस्तकमाला

यह है बुरी बीमारी

डा. मीनाक्षी स्वामी

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली

ये है बुरी बीमारी

ये है बुरी बीमारी

डा० मीनाक्षी स्वामी

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली ११०००२

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
१७ बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली ११०००२
फ़ोन : ३३१९२८२, ३७२२२०६

वैज्ञानिक सोच-समझ पुस्तकमाला

मूल्य १२ रुपये
१९९६

मुद्रक : प्रभात पब्लिसिटी,
नई दिल्ली ११०००२

दो शब्द

भारत के पिछड़ेपन के कारणों में अंधविश्वास और अफवाहों का काफी बड़ा हिस्सा है। देश में विज्ञान और तकनीकी की उल्लेखनीय उन्नति के बावजूद अभी भी अंधविश्वासों का काफी बोलबाला है विशेषकर हमारे ग्रामीण इलाकों में। अफवाहें काफी तेज़ी से फैलती हैं और देश की प्रगति में बाधा बन जाती हैं।

जबकि हम २१वीं सदी की ओर अग्रसर हो रहे हैं तब ऐसी प्रवृतियां देश को पीछे की ओर धकेल रही हैं जिसे रोकना सभी का काम होना चाहिए, विशेषकर प्रौढ़ शिक्षकों का। बीमारी होने पर अभी भी लोग डाक्टर और वैद्य को न दिखाकर झाड़-फूंक आदि करवाते हैं जिसके कारण बीमार व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है। विज्ञान में इतनी उन्नति के बावजूद लोगों का अंधविश्वासों पर चलना शर्म की बात है। इसका मुख्य कारण है निरक्षरता, जागरूकता और विज्ञान की सोच और समझ की कमी।

इस कमी को दूर करने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ प्रयत्नशील है। इस दिशा में ''वैज्ञानिक सोच और समझ बढ़ाने'' पर एक लेखक कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस लेखक कार्यशाला में वैज्ञानिक सोच और समझ को विकसित करने वाली कुछ पुस्तकों की रचना की गई। इन पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें ''वैज्ञानिक सोच-समझ पुस्तकमाला'' के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें नवसाक्षरों एवं आम लोगों को विज्ञान से सम्बन्धित जानकारी सरल, सुबोध

भाषा में देंगी। विज्ञान भी सभी के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि 'सबके लिए स्वास्थ्य' और 'सबके लिए शिक्षा'। आशा है यह पुस्तकें नवसाक्षर साहित्य में एक सार्थक वृद्धि करेंगी।

हम शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आभारी हैं जिन्होंने लेखक कार्यशाला और इन पुस्तकों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

कैलाश चौधरी
महासचिव
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

नई दिल्ली
दिसम्बर, १९९६

"ये है बुरी बीमारी"

गर्मी की सांझ है। खेतों के उस पार नीला आसमान है। नीले आसमान में लाल-लाल सूरज का गोला तेज़ी से नीचे उतर रहा है। आसमान में लाली छा रही है।

"खनन-खनन, खनन-खनन, रून-झुन-रून-झुन," बैलों के गले की घंटियाँ बज रही हैं। पैरों के घुँघरू खनक रहे हैं। गाँव की कच्ची पगडंडी पर एक बैलगाड़ी धूल उड़ाती आ रही है।

बैलगाड़ी बड़ी सुंदर सजी है। सफ़ेद बैलों की पीठ पर लाल रंग का गोटे वाला कपड़ा है। सिर पर मोर के पंख, गले में घंटियाँ, पैरों में घुँघरू हैं।

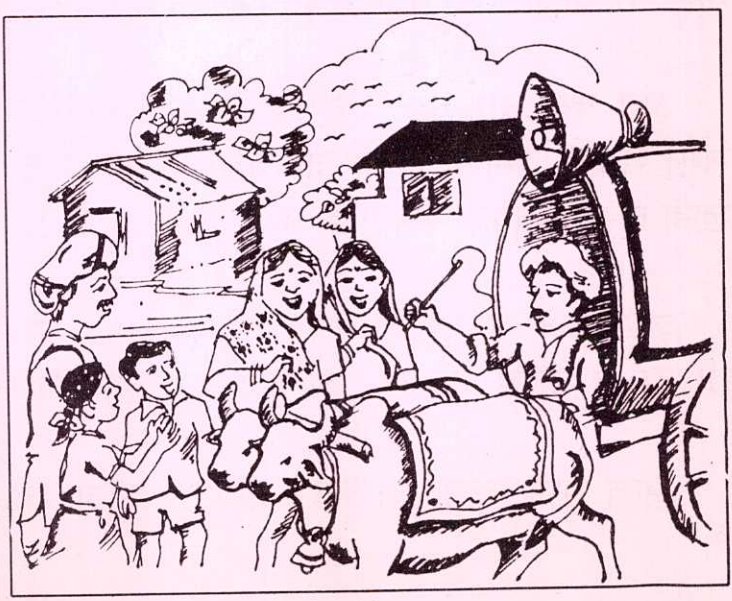

"चल-चल" बैलों को प्यार से पुचकारता, हांकता गाड़ीवान बैलगाड़ी गांव की ओर ले जा रहा है।

बैलगाड़ी के चारों और पीले रंग का रेशमी पर्दा लगा है। ऊपर भोंगा। गांव तक पहुँचते-पहुँचते गाना बंद हो जाता है।

"आ गया, आ गया, कठपुतली का तमाशा।"

लोग घर के भीतर अपने-अपने कामों में लगे थे। जैसे ही शोर सुना, सब बाहर निकल आए।

गीत फिर बजता, फिर बंद होता। फिर कोई कहता-"आ गया, कठपुतली का तमाशा। आपके गांव में। आज रात को आठ बजे चौपाल पर।"

अब क्या था। सब जल्दी-जल्दी काम निपटाने लगे। सबको तमाशा देखने जो जाना था। बच्चे तो खाना-पीना भूलकर बैलगाड़ी के पीछे चल दिए।

शाम ढल ही गई थी। गाँव के युवक भी ज़रा सी देर में कपड़े बदलकर चौपाल पर पहुँच गए।

आज सभी जल्दी खा-पीकर चौपाल पर जा रहे हैं।

रधिया की बहू, धनिया की भाभी, चमेली, चंदा सब सज-धज कर चलीं लालू की माँ को चार दिन से बुखार था। उससे भी नहीं रहा गया। कमज़ोरी भूलकर वह भी धीरे-धीरे चौपाल की ओर चल दी।

दीनू की दादी को कम दिखता है। दीनू का हाथ पकड़कर वे भी जल्दी-जल्दी जा रही हैं।

सारे गाँव के लोग चौपाल पर इक्ट्ठे हो गए। बच्चे, बूढ़े-नई उमर के आदमी-औरत, लड़के-लड़की।

चबूतरे पर पर्दा लगा है। तेज़ रोशनी है। गाने बज रहे हैं। नवयुवक भी साथ में गुनगुना रहे हैं। औरतें बात कर रही हैं। बच्चे शोर मचा रहे हैं।

सब सोच रहे हैं कि खेल कब शुरू हो। हर कोई आगे बैठना चाहता है।

पर यह तो हो नहीं सकता। जो देर से आए, उन्हें पीछे बैठना पड़ा। वे पछता रहे थे। उचक-उचक कर देख रहे थे। कुछ खड़े थे।

तभी गाना बंद हुआ। पर्दा उठा। पर्दा उठते ही शोर बंद हो गया। पर्दे पर गुलाबी ज़रीदार शेरवानी, सफ़ेद पायज़ामा पहने, लंबी सफ़ेद दाढ़ी, तीखी नाक, बड़ी-बड़ी आँखें झपकाते बूढ़े बाबा की कठपुतली दिखी। बूढ़े बाबा दाढ़ी हिलाते फुदकते-फुदकते आए। पोपले मुंह से बोले-"मैं हूँ बूढ़ा बाबा, तुम्हारा चाचा। तुम हो मेरे बच्चे। अच्छा बताओं मेरी उमर क्या है।"

किसी ने कहा-"अस्सी साल" किसी ने "सत्तर साल" तो किसी ने "नब्बे साल" कहा।

पर बूढ़े चाचा हंसे, बोले- "अरे, तुम्हें कुछ नहीं पता। में तो चार सौ साल का बूढ़ा हूँ। चार सौ साल का। पर ये इमरती रानी अभी जवान है। वह तुमको नाच दिखाएगी।

यह कह कर चाचा एक कोने में चले जाते हैं।

एक सुंदर सी कठपुतली आती है। काली छींट का घाघरा, लाल छींट की ओढ़नी, माथे पर बोर, गले में माला, हाथों में चूड़ियाँ खनकती हैं। पैरों में घुँघरू।

कठपुतली मटक-मटक कर, लचक-लचककर, घूम-घूम कर नाचती है-

"ढोला ढोल मंजीरा बाजे रे,
काली छींट को घाघरो
निझारा मारे रे।"

गीत खत्म होता है। सब लोग ताली बजाते हैं। इमरती रानी झुककर सलाम करती है।

चाचा फिर आते हैं। पूछते हैं-"अच्छा, बच्चों इमरती रानी ने अच्छा नाच दिखाया ना?

सब कहते हैं-"हाँ चाचा।"

चाचा इमरती रानी से कहते हैं। "इमरती रानी तुम्हारा नाच तो सबको अच्छा लगा। अब कोई तमाशा दिखाओ"।

इमरती- "हाँ चाचा, ज़रूर। पर कैसा तमाशा दिखाऊँ? हंसी की फुलझड़ी या किसी का दुखदर्द।"

चाचा- "अरी इमरती, हंसी की फुलझड़ी तो गाँव वाले बहुत देख चुके हैं। आज तो दुखदर्द का तमाशा बताओ। क्यों मेरे बच्चों? चाचा गाँव वालों से पूछते हैं।

"हाँ चाचा" गाँव वाले बोले।

चाचा- "देख इमरती रानी, मेरे बच्चे भी यही चाहते हैं।

इमरती- "अच्छा चाचा, आज मैं अस्पताल ले चलती हूँ।"

चाचा (चिन्ता करते हुए) "अरे अस्पताल क्यों? सब ठीक तो है?"

इमरती- "नहीं चाचा, बहुत से लोग बीमार पड़े हैं। बड़े दुखी है"।

चाचा- "क्या हुआ उन्हें"?

इमरती- "चलो चाचा, चलकर देखते हैं"।

(पर्दा गिरता है)

(पर्दा उठने पर-अस्पताल का दृश्य)

कुछ पलंग हैं। पलंगों पर मरीज़ लेटे हैं। सफेद पलंग, सफ़ेद चादर, सफ़ेद दीवारें। इमरती और चाचा ने भी सफ़ेद कपड़े पहने हैं।

इमरती- "सुनो चाचा, इस अस्पताल के मरीज़ों की दुखभरी कहानी"

दोनों फुदकते-फुदकते एक मरीज़ के पास जाते हैं।
इमरती मरीज़ के पास रूक कर उससे पूछती है-

"भाई मेरे भाई
बता तो ज़रा
तू है कैसे यहाँ
तुझे क्या है, हुआ?"

मरीज़ बहुत ही कमज़ोर है। धीरे से आधा उठता है। कहता है-

मरीज़ - "मेरी इमरती बहन,
क्या बताऊँ भला?
मुझे तो हुई
एक भयानक बीमारी।"

इमरती- "ओ भाई मेरे
बीमार तो सभी हैं,
भयानक बड़ी
पर तेरी बीमारी का
क्या नाम है बता?
बता मेरे भाई
जल्दी बता?"

मरीज़- "मेरी इमरती बहन,
क्या बताऊ भला?
मुझे एड्स है हुआ।"

इमरती - "एड्स"?
अरे मेरे भाई।
ये क्या है बला?
पहले तो ये नाम
कभी ना सुना
अरे मेरे भाई।
ये क्या है बला?
इसका नाम तो मैंने
अभी ही सुना।"

मरीज़- "सुनो, मेरी बहना
ये एड्स है
बुरी इक बला।
हट्टा-कट्टा था मैं
कमज़ोर होता गया
थका-थका सा बीमार
मैं रहने लगा
कमज़ोरी बढ़ी
तो दवाखाने चला
जो डॉक्टर ने देखा
तो दुख से कहा।"

कहते-कहते मरीज़ की आँखों में आँसू आ जाते हैं। इमरती मरीज़ को लिटाती है। उसके आँसू पौंछती है।

इमरती- "अरे मेरे भाई
दुख करना नहीं।
बताना ज़रा
डॉक्टर ने क्या कहा?"

मरीज़- "डॉक्टर ने मुझे
बड़े दुख से कहा
तुझे एड्स है हुआ
बहन इमरती
ओ बहन इमरती
मुझे एड्स है हुआ
भला चंगा था मैं,
पर लगी जब से मुझे ये
बुरी सी बला
बेजान, टूटा-टूटा सा
हरपल मैं
रहने लगा।"

चाचा- "घबराना क्यों मेरे बेटा
होगा इस रोग का
इलाज तो कोई?"

मरीज़- "नहीं, मेरे चाचा
बिल्कुल नहीं
यही तो है
चाचाजी दुखड़ा मेरा
यह रोग लाइलाज है
इससे बचकर रहना ही
बस इसका इलाज है"

इमरती- "अच्छा भैया। पर ये बुरी बीमारी
तुझे लगी कैसे?"

मरीज़- "ओ मेरी बहन
कैसे तुझसे कहूँ
ये कथा तो बड़ी ही
शर्मनाक है
गर्दन झुकती है मेरी
आँख उठती नहीं
कैसे तुझसे कहूँ?
मैं गांव से दूर
अपने-अपनों से दूर
शहर में पड़ा था
काम से लगा था
वहाँ जगह की कमी थी
तो तेरी भाभी
गाँव में पड़ी थी
मुझसे ग़लती हुई
तुझसे कैसे कहूँ
कभी मुनिया के कोठे पे
कभी छमिया के कोठे पे
मैं जाता रहा
वहीं से लगी
ये बीमारी मुझे
बीमारी बहन
ये बड़ी ही बुरी है
सज़ा है सज़ा।

तेरी भाभी से दग़ा बाज़ी
जो की
उसी की मुझको मिली
है ये सज़ा
अब रोता हूँ
झींकता हूँ, पछताता हूँ
पर इससे ज़्यादा
कुछ नहीं कर पाता हूँ"

इमरती- "तब तो तुझको मिली
है पापों की सज़ा,
जो हैं "देखें" तुझे,
वो भी लें एक सबक
वफ़ादारी करें
चाहे हो मर्द या औरत।"

(इमरती अब दूसरे मरीज़ के पास आती है। यह औरत है।)

इमरती- "और बहन ज़रा तू सुना।
क्या तूने पति से दग़ा है किया।"

मरीज़ औरत- "नहीं -नहीं बहन
मैंनें दग़ा ना किया।"

इमरती- "पर मेरी बहन ज़रा
तेरी कथा तो सुना।
जो तूने पति से
दग़ा ना किया
तब कैसे मिली है
तुझे ये सज़ा?"

मरीज़ औरत- "मेरी बहन
मेरे साथ तो
बड़ा ही दग़ा है हुआ"

इमरती- "हुआ है दग़ा?

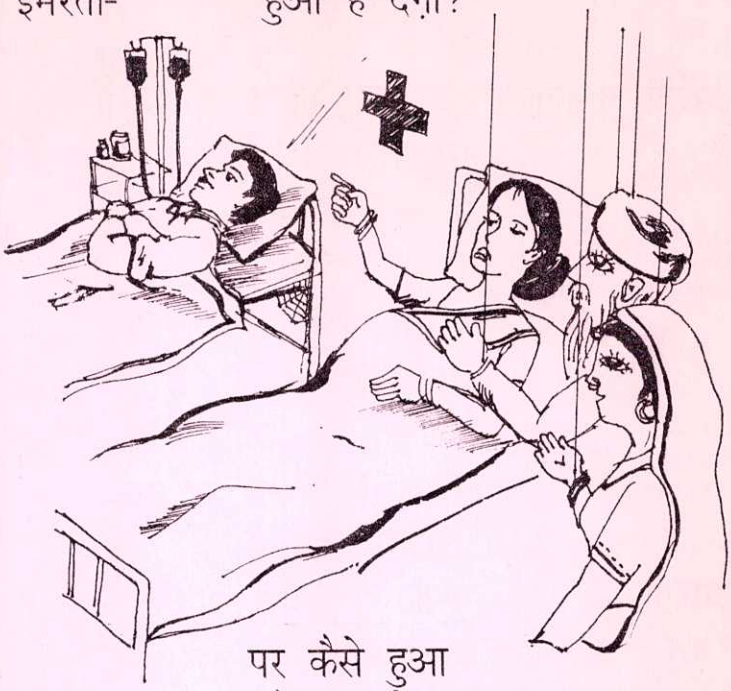

पर कैसे हुआ
और किसने किया।"

मरीज़ औरत-(पड़ौस के पंलग की तरफ़ इशारा
करके कहती है।)
"ये है मेरा पति
इस पलंग पर पड़ा
लाया बीमारी
ये कोठों पे जा के
वहीं से है लाया
मुझे भी लगाई

अब मैं भी पड़ी हूँ
पति के पापों की सज़ा
मैं भी भुगत रही हूँ।"

इमरती- "अरी बहन, यह तो बड़ा ही दुख है।"

इमरती तमाशा देखने आए लोगों से कहती है-

"मेरी बहनों
और मेरी माताओं
तुम भी समझो
तुम भी जानो
पति है ख़राब
तो पाप
अपने सिर पर
न डालो।"

इमरती- "चाचा, ये मरीज़ तो
बड़े ही बुरे हैं
सब अपने पापों
का फल भुगत ही रहे हैं
जो बोया है
वही तो काट रहे हैं,
हम तो चलें
इनका दुख दर्द
अब हम क्या सुनें।"

(एक मरीज़ थोड़ा सा उठता है, कमज़ोर आवाज़ में कहता है)

मरीज़- "बहन इमरती
ओ बहन इमरती
सबको ग़लत ना समझना
मेरा चाल-चलन तो भला था,
पर ये बीमारी मुझे भी लगी है।"

इमरती- "तू सच कह रहा है?"

मरीज़- "मैं झूठ नहीं
बिन्कुल सच कहता हूँ।
मेरी एक ट्रक से
टक्कर हुई थी।
अचानक खून की
एक नदी सी बही थी,
जान बचाने को
जो खून चढ़ा था,
उसी से तो ये रोग
मुझको लगा था।"

इमरती- "अच्छा। यह बीमारी खून के
(आश्चर्य से) ज़रिये भी होती है, हाय। मुझे पता
नही था।"
मेरे भाई
भूल मुझसे हुई
मेरे गाँववालों
ऐसी भूल ना करना
इस बीमारी के मरीज़ की
खूब सेवा टहल करना।"

चाचा- "पर छूने से किसी को
जो लगी ये बीमारी"

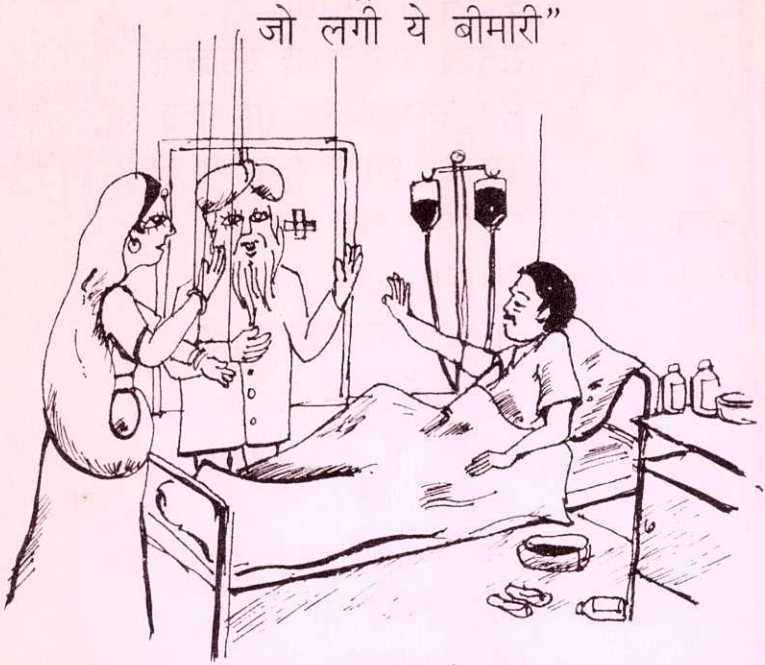

(तभी डॉक्टर साहब आते हैं, डॉक्टर साहब ने सफ़ेद कोट पहना है, चश्मा लगाया है।)

डॉक्टर- "चाचा, ओ मेरे चाचा,
पड़े आपके चरण
मैं धन्य हो गया
पर चाचा, ओ मेरे चाचा
यह बीमारी लगती नहीं
छूने से कभी
ये लगती नहीं
थूकने, खाँसने, छींकने से कभी
चूमने, गले लगने से भी
बीमारी ये लगती नहीं।"

चाचा- "फिर कैसे लगती है?"

डॉक्टर- "लगती है बीमारी ये
शरीर संबंधों से
आती है बीमारी ये
खून के ज़रिये
और चाचा हाँ
सावधान हो जाना
सुई भी ले आती है,
बीमारी के कीटाणु।"

चाचा- "बेटा तुमने अच्छी बात बताई
पर क्या? फिर कभी
सुई जो लगवाई,
तो क्या हो जाएगी
बीमारी हमको

कैसे इससे बचना होगा
बतलाओ तो बेटा।"

इमरती- "तो क्या चाचा
हम भी कोई कम हैं,
कभी ना सुई लगवाएंगे
फिर कैसे आएगी ये बीमारी।"

डॉक्टर- "अरे इमरती रानी
हो तो बड़ी चतुर स्यानी
पर सुई से कैसे बच पाओगी
पड़ी कभी भी तुम्हें ज़रूरत
सुई तो लगवाओगी
पर हाँ एक तरीका है
बीमारी से बचने का।"

इमरती- "जल्दी बताओ ना
करते हो क्यों देर भला?"

डाक्टर- जब भी तुम लगवाओ सुई
तब ही साफ़ करवाओ सुई
एक तरीका बड़ा भला है
एक बार लगाकर फेंको
ऐसी लाओ सुई

इमरती- "अच्छा.....।
सीधा, सरल तरीका
यह तो बड़ा भला है
पर ये नौजवान
लड़का क्यों
इस बिस्तर पे पड़ा है?"

डॉक्टर- "वो नौजवान बेचारा
सुई से ही घिरा है
बगैर साफ कराए सुई से
उसने अपने हाथों पे
अपना नाम गुदवाया
और बैठे ठाले ही
ये बीमारी ले आया।"

चाचा- "तो क्या गोदने गुदवाने से भी
बीमारी हो जाती है?

डॉक्टर- "गोदने-गुदवाने या कान छिदवाने
में साफ की हुई सुई काम में न
लो तो ये बीमारी हो जाती है।

इमरती - "हाय राम।"

डॉक्टर- "वो देखो उधर
देखो उस लड़के को
उसने बिना साफ किए
नशे की सुई जो लगाई
दोस्तों से उसे भी
ये बीमारी आई।"

चाचा- "मेरे बेटे
सुई से तो बच जाएंगे,
पर जो पड़ी ज़रूरत
खून की
तब इस बीमारी से
हम कैसे बच पाएंगे।
मेरे बेटे

यह तो बतलाओ ज़रा?"

डॉक्टर- "बच पाएंगे
चाचा हम उससे भी
बच पाएंगे
पड़ी ज़रूरत खून चढ़ाने की
तो पहले खून की जाँच

करवाएँगे
चाचा- इस बीमारी से
बचने का ये है सरल तरीका
जब भी खून लो
पहले उसकी
जाँच ज़रूर करवा लो।"

चाचा और
इमरती
दोनों गाते हैं- "तब तो ठीक है।"

"सुनो गाँव वालों, सुनो गाँव वालों
ये एड्स है बड़ी
जानलेवा बीमारी
लग जाए तो
खून हो जाए पानी
न मरे न जिये वो
पड़ा ही रहे वो
रोते-रोते गुज़ारे
बची ज़िन्दगानी
ये एड्स हे बड़ी
जान लेवा बीमारी
बचो गाँव वालों
बचो गाँव वालों।

चाचा और इमरती गाते हैं। गाना चलता रहता है। पर्दा गिरता है। गाँव वाले खेल देखते-देखते सोच में पड़ जाते हैं।

ठाकुर रतनसिंह का चाल-चलन ठीक नहीं था। वे सोचते हैं- अब बुरी औरतों की संगत नहीं करूँगा।

मोहन ड्राईवर ने सोचा अब छमिया के कोठे पर नहीं जाऊँगा

गीता का पैर भारी था। गीता की सास बोली। "अबके जब गीता को सुई लगवाने जाऊँगी तो एक बार काम में लेकर फेंकने वाली सुई ले जाऊँगी।

लालू की माँ लालू के बापू से बोली-"अबके लालू को टीका लगे तो ध्यान रखना। सुई साफ हुई कि नहीं खूब ध्यान रखना।"

लालू के बापू बोले-"अरी, टीका लगाते समय तो डॉक्टर बाबू सुई साफ करते हैं। पर हाँ तू लालू के हाथ पर नाम गुदवाते समय ज़रूर ध्यान रखना।"

तभी पर्दा उठता है। चाचा अब नीली-गोटेदार शेरवानी और चूड़ीदार पहने हैं। चंदा ने घाघरा और ओढ़नी पहनी है।

चाचा- "अच्छा बच्चों। कैसा लगा खेल?"
सब कहते हैं- "बहुत अच्छा चाचा।"
चाचा- "तो बजाओ ताली"
सब ताली बजाते हैं।